

# डॉ. टिबेरियस राटा, पुराने नियम का धर्मशास्त्र, सत्र 1, परिचय और कार्यप्रणाली

© 2024 टिबेरियस राटा और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. टिबेरियस राटा और ओल्ड टेस्टामेंट धर्मशास्त्र पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 1, परिचय और कार्यप्रणाली है।

सभी को नमस्कार। मेरा नाम टिबेरियस राटा है। मैं ग्रेस कॉलेज और थियोलॉजिकल सेमिनरी में ओल्ड टेस्टामेंट पढ़ाता हूँ, और आज, हम ओल्ड टेस्टामेंट धर्मशास्त्र के बारे में बात करने जा रहे हैं। तो सबसे पहले, हम अनुशासन के परिचय और कार्यप्रणाली के बारे में बात करने जा रहे हैं।

हम शुद्ध पुराने नियम का धर्मशास्त्र नहीं करते क्योंकि हम ऐसा नहीं कर सकते; हम पुराने नियम के भविष्यवक्ता नहीं हैं; हम ईसाई शिक्षक हैं, इसलिए हम पुराने नियम को इस तरह नहीं पढ़ा सकते जैसे कि यीशु क्रूस पर नहीं मरे और फिर से नहीं जी उठे। इसलिए, हमें एक तरह से बाइबिल धर्मशास्त्र करना होगा, लेकिन यह पुराने नियम का धर्मशास्त्र है। यहाँ कुछ पिछली विद्वत्ता से कुछ परिभाषाएँ दी गई हैं।

आप कह सकते हैं कि बाइबिल में निहित धर्मशास्त्र बहुत स्पष्ट है। वोस कहते हैं कि व्याख्यात्मक धर्मशास्त्र की शाखा बाइबिल में निहित ईश्वर के आत्म-प्रकटीकरण की प्रक्रिया से संबंधित है। तो अब हमारे पास कुछ ऐसे शब्द हैं जो बहुत, बहुत महत्वपूर्ण हैं।

दूसरे शब्दों में, पुराने नियम के धर्मशास्त्र को व्याख्यात्मक धर्मशास्त्र होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, इसे पाठ से बाहर आने की आवश्यकता है। हम ईसेजेसिस नहीं कर सकते, पाठ पर अपने विश्वासों को नहीं थोप सकते, बल्कि पाठ से अपने विश्वासों को निकाल सकते हैं।

और यह परमेश्वर के स्व-प्रकाशन के बारे में बात कर रहा है। यह कोई मानवीय कार्य नहीं है। हमारा मानना है कि यह परमेश्वर का त्रुटि रहित वचन है।

इसलिए हम यह मान सकते हैं कि यह सिर्फ आस्था और व्यवहार के लिए नहीं है, बल्कि यह हर उस चीज़ के लिए है जिसे हम देख रहे हैं। एबेलिंग बाइबिल धर्मशास्त्र को ऐसे धर्मशास्त्र के रूप में परिभाषित करते हैं जो बाइबिल के अनुरूप हैं। और फिर, जाहिर है, यह बहुत सरल है।

लेकिन इसमें और भी बहुत कुछ है। वास्तव में, बाइबिल धर्मशास्त्र की अवधारणा का जन्म सुधार के बाद ही हुआ था। बाइबिल धर्मशास्त्र शब्द का पहली बार इस्तेमाल 17वीं शताब्दी में जोहान फिलिप गैबलर ने किया था, जिन्हें बाइबिल धर्मशास्त्र का जनक माना जाता है।

तो, यह वास्तव में पुस्तक का शीर्षक है। उनके काम का शीर्षक है *बाइबिल और हठधर्मी धर्मशास्त्र के बीच उचित अंतर और उनकी सीमाओं का सही सीमांकन पर एक प्रवचन*।

इसलिए गैबलर ने धर्मशास्त्र के तरीके को देखा और कहा, मुझे लगता है कि इसे देखने का एक अलग तरीका होना चाहिए।

इसलिए, वह स्पष्ट रूप से बाइबिल धर्मशास्त्र और हठधर्मी धर्मशास्त्र, या कभी-कभी जिसे हम व्यवस्थित धर्मशास्त्र कहते हैं, के बीच अंतर करता है। इसलिए, गैबलर ने जो किया, वह फिर से, बाइबिल धर्मशास्त्रियों की मदद करता है, वह यह है कि उसने बाइबिल धर्मशास्त्र को एक विशुद्ध ऐतिहासिक चरित्र दिया। इसलिए, जब हम पुराने नियम को देखते हैं और देखते हैं कि परमेश्वर ने खुद को कैसे प्रकट किया, तो हमें इसे क्रमिक रूप से देखना होगा।

हमें शुरुआत से शुरू करना होगा और फिर देखना होगा कि ईश्वर ने इतिहास में खुद को कैसे प्रकट किया। दूसरे शब्दों में, हमें ऐसा नहीं करना चाहिए, और फिर, व्यवस्थित धर्मशास्त्री उससे असहमत हो सकते हैं। हमें ईश्वर के बारे में सामान्य रूप से बात करके उत्पत्ति से एक श्लोक, मलाकी से एक श्लोक, भजन से एक श्लोक नहीं लेना चाहिए। लेकिन उन्होंने कहा, आइए देखें कि ईश्वर ने इतिहास में खुद को कैसे प्रकट किया। और गैबलर के अनुसार, यह वास्तव में बाइबिल धर्मशास्त्र की जड़ है।

वह लिखते हैं कि बाइबिल धर्मशास्त्र को बाइबिल के अलग-अलग दस्तावेजों पर ध्यान देना चाहिए, उन्हें उनके ऐतिहासिक संदर्भ में रखना चाहिए और उनकी अभिव्यक्ति के रूप का अवलोकन करना चाहिए। तो फिर, यह वह जगह है जहाँ हम व्याख्यात्मक धर्मशास्त्र के साथ जाते हैं। सबसे पहले, आप व्याख्या से शुरू करते हैं; आप बाइबिल और पाठ को देखते हैं, और फिर आप ऐतिहासिक संदर्भ को देखते हैं, और फिर आप देखते हैं कि वे कैसे व्यक्त किए गए हैं, और फिर आप इसे धर्मशास्त्र के रूप में लिखते हैं।

गैबलर ने खुद बाइबिल धर्मशास्त्र शब्द को सच्चे बाइबिल धर्मशास्त्र के लिए अपर्याप्त माना, जिसका उनके लिए मतलब था, और मैं उद्धृत करता हूँ, व्यक्तिगत दस्तावेजों की व्याख्या और उनकी विभिन्न अभिव्यक्तियों की तुलना। मुझे लगता है कि याद रखने वाली सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि बाइबिल धर्मशास्त्र व्याख्या और व्यवस्थित धर्मशास्त्र के बीच खड़ा है। इसलिए व्यवस्थित धर्मशास्त्र में कुछ भी गलत नहीं है, वह कहेंगे।

लेकिन वहाँ पहुँचने से पहले, आपको बाइबिल धर्मशास्त्र से गुजरना होगा। आप देखते हैं कि कैसे परमेश्वर ने इतिहास में खुद को प्रकट किया और उस रहस्योद्घाटन की प्रगति को देखते हैं। फिर से, वह ऐतिहासिक तत्व है जिसे गैबलर ने सामने रखा है।

और मुझे लगता है कि इसे देखने का यह एक बहुत अच्छा तरीका है। उदाहरण के लिए, जब हम ईश्वर को सृष्टिकर्ता के रूप में देखते हैं, तो हम उत्पत्ति से शुरू करते हैं, और फिर हम आगे बढ़ते हैं और देखते हैं कि ईश्वर ने खुद को कैसे प्रकट किया। अब अगर आप किताबों की तिथि से असहमत हैं, तो आप कह सकते हैं, ठीक है, हमें पहले अय्यूब से शुरू करना होगा।

और यह ठीक है। सबसे पहले अय्यूब से शुरू करें। क्या अय्यूब ने ईश्वर को सृष्टिकर्ता के रूप में बताया? हाँ, उसने बताया।

इसलिए, सृष्टिकर्ता के रूप में ईश्वर बाइबिल धर्मशास्त्र और पुराने नियम धर्मशास्त्र का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है, और ईश्वर खुद को सृष्टिकर्ता ईश्वर के रूप में वर्णित करके शुरू करते हैं। ऐसे अन्य विद्वान भी हैं जो बाइबिल धर्मशास्त्र के इस विचार को जारी रखते हैं, 19वीं सदी के धर्मशास्त्री जैसे हरमन शुल्ज़, गेरहार्ड डॉस वोस और ईजे यंग। उन्होंने बाइबिल धर्मशास्त्र को देखा और उद्धृत किया, बाइबिल की व्याख्या की वह शाखा जो ईश्वर की प्रकट गतिविधि, जिन लोगों से उसने बात की उनके आध्यात्मिक अनुभव और लिखित शब्द के चरित्र के प्रकाश में मनुष्यों के लिए ईश्वर के रहस्योद्घाटन से संबंधित है।

और फिर, यहाँ कुछ तत्व हैं। इनमें से किसी भी धर्मशास्त्री ने इस बात से इनकार नहीं किया कि यह परमेश्वर का वचन है। परमेश्वर अपने वचन में खुद को प्रकट करता है।

वह खुद को अन्य तरीकों से, स्वर्गदूतों के माध्यम से प्रकट करना चुन सकता था। लेकिन नहीं, उसने ऐसा नहीं किया। उसने खुद को अपने शब्दों और ऐतिहासिक कृत्यों में प्रकट करना चुना।

फिर से, गैबलर कहेंगे कि हमारे अध्ययन में व्यवस्थित धर्मशास्त्र के लिए एक जगह है, लेकिन हमें अंतरों को समझने की ज़रूरत है। तो, सबसे पहले, व्यवस्थित धर्मशास्त्र और बाइबिल धर्मशास्त्र दोनों में समानताएँ हैं कि कैसे वे पवित्रशास्त्र सामग्री से निपटते हैं। वे बाइबिल के पाठ से निपटते हैं।

इसलिए, जब तक हम वहाँ से शुरू करते हैं, हम अच्छे हैं। अब, व्यवस्थित धर्मशास्त्र, उदाहरण के लिए, मनुष्य के सिद्धांत, ईश्वर के सिद्धांत, पाप, इत्यादि के संबंध में शास्त्र सत्य को उसकी संपूर्णता में प्रस्तुत करता है। बाइबिल धर्मशास्त्र, कुलपतियों, मूसा और मसीह के समय में मनुष्यों के लिए ईश्वर के रहस्योद्घाटन की परिपक्वता के विशेष चरण को उजागर करता है।

तो, वहाँ वह प्रगति है, कुछ ऐसा जो, फिर से, व्यवस्थित धर्मशास्त्र नहीं करता है। वे दोनों व्याख्या करते हैं, दोनों बाइबिल धर्मशास्त्री और व्यवस्थित धर्मशास्त्री। वे बाइबिल की व्याख्या करते हैं, लेकिन जिस तरह से वे अपनी सामग्री को व्यवस्थित करते हैं वह अलग है।

बाइबिल धर्मशास्त्रियों के पास अधिक ऐतिहासिक, प्रगतिशील व्यवस्था है। बाइबिल में रुचि रखने वाले विद्वानों ने इसे अपनाया। सबसे प्रसिद्ध लोगों में से एक जीई राइट हैं, जिन्होंने कहा कि ईश्वर न केवल वाचा का ईश्वर है, बल्कि इतिहास का भगवान भी है।

एक तरह से, वह जर्मन स्कूल के खिलाफ़ प्रतिक्रिया करता है, जो चमत्कारों के कारण बाइबल की कुछ सामग्री को अस्वीकार करता है, उदाहरण के लिए। आपके पास ऐसे धर्मशास्त्री थे जिन्होंने कहा, ठीक है, आपको पलायन पर विश्वास करने की ज़रूरत नहीं है। पलायन वास्तव में इसलिए हुआ ताकि आप यह विश्वास कर सकें कि ईश्वर महान है और ईश्वर ही उद्धारक है। और जीई राइट कहते थे, नहीं, ईश्वर ने ऐतिहासिक कृत्यों में खुद को प्रकट किया।

आप धर्मशास्त्र को घटना की ऐतिहासिकता से अलग नहीं कर सकते। इसलिए वह आगे कहते हैं कि ईश्वर केवल वाचा का ईश्वर नहीं है, वह इतिहास का भी स्वामी है। वॉन राड ने भले ही कुछ

ऐसी बातें कहीं जो हमारे धर्मशास्त्र के साथ मेल नहीं खातीं, लेकिन उनका मानना था कि पुराना नियम एक ऐतिहासिक पुस्तक है।

इज़राइल का विश्वास इतिहास के धर्मशास्त्र पर आधारित है। अब, वह कहाँ गलत हो गया, उसने कहा कि जो हुआ वह ज़रूरी नहीं है। जो महत्वपूर्ण है वह यह है कि इज़राइल ने जो माना वह हुआ। खैर, इसके साथ समस्या यह है कि कभी-कभी इज़राइल वास्तव में जो हुआ उस पर विश्वास नहीं करता था, या कम से कम उन्होंने उस विश्वास के अनुसार कार्य नहीं किया।

ऐसे अन्य विद्वान भी हैं जो बाइबिल धर्मशास्त्र के इस विचार का अनुसरण करते हैं। टेरी एन बाइबिल के इतिहास के बजाय इसके साहित्य पर ध्यान केंद्रित करती हैं। इसलिए, ये लोग फिलिप गोबलर और अन्य लोगों द्वारा कही गई बातों का प्रतिकार करते हैं।

उन्होंने कहा कि जो महत्वपूर्ण है वह ऐतिहासिक ऐतिहासिकता नहीं बल्कि साहित्य है। और इसीलिए, उदाहरण के लिए, अब आप मिशिगन विश्वविद्यालय, ओहियो स्टेट, हार्वर्ड में बाइबल की कक्षाएँ ले सकते हैं, लेकिन वे बाइबल की घटनाओं की ऐतिहासिकता के बारे में जो कुछ भी लिख रहे हैं या कह रहे हैं, उस पर विश्वास नहीं करते। वे बस इतना कहते हैं कि यह साहित्य की एक सुंदर पुस्तक है।

जाहिर है, हम इससे सहमत नहीं हो सकते। कैसर कहते हैं कि इतिहास केवल रहस्योद्घाटन का माध्यम नहीं है; यह वह आधार है जिसके माध्यम से ईश्वर को जाना जा सकता है। फिर से, ईश्वर ने खुद को इतिहास में प्रकट किया।

वेस्टरमैन और क्लेमेंस के अनुसार, बाइबल एक ऐतिहासिक और बौद्धिक आयाम वाला साहित्य है। फिर से, वे हमेशा घटनाओं की ऐतिहासिकता को अस्वीकार नहीं करते हैं, लेकिन वे धर्मशास्त्र के ऐतिहासिक तत्व या ऐतिहासिक आयाम को स्वीकार करते हैं। अब, पुराने नियम के धर्मशास्त्र के अन्य मॉडल भी हैं।

कुछ मौजूदा मॉडल हैं, उदाहरण के लिए, टाइपोलॉजिकल मॉडल, वॉन रेड और आइक्रोडट। और हम बाद में जब वाचा के बारे में बात करेंगे तो आइक्रोडट के बारे में बात करेंगे। बहुत से लोग बाइबिल धर्मशास्त्र को हील्सगेस्चीच्चे के लेंस के माध्यम से देखते हैं, जो मोक्ष के इतिहास का विचार है।

और यह वास्तव में बाइबिल धर्मशास्त्र के बहुत करीब है क्योंकि हील्सगेस्चीच्चे, उद्धार का इतिहास, बताता है कि कैसे परमेश्वर इतिहास में अपने लोगों को बचा रहा है। और यह पुराने नियम के साहित्य में एक बहुत ही महत्वपूर्ण अवधारणा है। फ्रे ने इस कथात्मक दृष्टिकोण को विकसित किया है।

और फिर, इंजीलवादी विश्वासियों के रूप में, हम इस मॉडल को स्वीकार नहीं करते हैं, हालांकि कुछ बहुत महत्वपूर्ण तत्व हैं जो हम फ्रे से सीख सकते हैं। लिंडबर्ग ने एक सांस्कृतिक-भाषाई पद्धति विकसित की है। उन्हें वास्तव में उत्तर-उदारवादी धर्मशास्त्र का जनक माना जाता है, जिसे कथात्मक धर्मशास्त्र के रूप में भी जाना जाता है।

उन्होंने तर्क दिया कि चर्च को ईसाई धर्म की कथात्मक प्रस्तुति पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, ईसाई कहानी पर शुरू से अंत तक। इसलिए, वे कहते हैं, यदि आप किसी कहानी को देखते हैं, तो आप संस्कृति और संस्कृति के विभिन्न पृष्ठभूमि मामलों, व्याकरण और प्रथाओं के बारे में भी सीखते हैं। और फिर, वे कहेंगे कि पुराने नियम का अध्ययन करने का यही तरीका है।

गोटवाल्ल ने समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण विकसित किया है, और वह वास्तव में मार्क्सवादी विश्लेषण से इज़राइल के प्रारंभिक इतिहास को पारंपरिक विजय के संदर्भ में नहीं, बल्कि कनानी समाज के भीतर एक किसान विद्रोह के रूप में प्रस्तुत करता है। तो, ये विद्वान वास्तव में क्या कर रहे हैं, वे देख रहे हैं कि आज दुनिया में क्या हो रहा है, और वे इसे अतीत में पढ़ रहे हैं, जो कि धर्मशास्त्र करने का एक बहुत ही, कुछ लोग कह सकते हैं, बहुत गलत तरीका है। और फिर, निश्चित रूप से, यहूदी बाइबिल धर्मशास्त्र भी है।

पुराने नियम के कुछ महान विद्वान हैं जिनसे हम सीख सकते हैं और लाभ उठा सकते हैं। फिर से, अंतर यह होगा कि ईसाई विद्वान मसीह में मसीहाईवादों के पूरे होने की आशा करते हैं, जबकि यहूदी विद्वान ऐसा नहीं करते। मेरे पास एक बार एक प्रोफेसर था जिसने वास्तव में एक यहूदी रब्बी के साथ रोमनों की कक्षा ली थी।

उन्होंने कहा कि यह रोमनों पर उनकी अब तक की सबसे अच्छी कक्षाओं में से एक थी, क्योंकि जो व्यक्ति पुराने नियम से संबंध स्थापित करने में सक्षम था, कक्षा के अंत तक, रब्बी ने कहा, ठीक है, वह पॉल है। मुझे इस पर विश्वास नहीं है। इसलिए, अंत में, यह विश्वास का मामला है और हम बाइबल के बारे में क्या विश्वास करते हैं।

क्या बाइबल परमेश्वर का वचन है जिसमें कोई त्रुटि नहीं है? और हम मानते हैं कि यह है। बाइबिल धर्मशास्त्र: भले ही उन्होंने इसे ऐसा नहीं कहा, लेकिन चर्च के पिताओं ने बाइबिल धर्मशास्त्र का अभ्यास किया, और उन्होंने विश्वास के ऐतिहासिक तत्वों को देखा। या एरियनियस, ओरिजन, ऑगस्टीन, तीसरी शताब्दी में, एकिनास ने ऐसा किया, महान सुधारकों, मार्टिन लूथर और जॉन कैल्विन ने ऐसा किया।

अगर आप जॉन कैल्विन के संस्थानों को देखें, तो पाएंगे कि उन्होंने ऐसी चीजें नहीं बनाईं। वे सिर्फ़ डेटा को व्यवस्थित करने में माहिर थे। उन्होंने जो कुछ भी मौजूद था, उसे लिया और फिर उसे अपने कामों में व्यवस्थित किया।

और उनके कामों में बाइबिल के धर्मशास्त्र का बहुत कुछ है। एक सवाल जो हमें पूछने की ज़रूरत है, वह यह है कि क्या पुराने नियम का कोई केंद्र है? क्या पुराने नियम का कोई केंद्र है? क्या पूरे पुराने नियम का कोई केंद्र है? क्या हम किसी केंद्र के बारे में बात कर सकते हैं? और एक विद्वान जो सुझाव देता है कि कोई केंद्र है, वह है वाल्टर ईच्रोड्ट। बेशक, वह आज हमारे इंजील स्कूलों में पढ़ाने में सक्षम नहीं होगा क्योंकि उसने वास्तव में कहा था कि पुराने नियम में बहुत कम वास्तविक सिद्धांत शामिल थे।

वह व्यवस्थित धर्मशास्त्रियों की बहुत आलोचना करते थे क्योंकि वे सैद्धांतिक धर्मशास्त्र या हठधर्मी धर्मशास्त्र से रूपरेखा अपनाते थे। आप जानते हैं, आप ईश्वर के बारे में बात करते हैं, और अब हम मनुष्य के बारे में बात करते हैं, और अब हम पाप के बारे में बात करते हैं। वह कहते थे, हम ऐसा नहीं कर सकते।

हमें पाठ का अध्ययन करना होगा और फिर पाठ से यह पता लगाना होगा कि वह किस बारे में बात कर रहे हैं। इसलिए, वह कहेंगे कि यह ईश्वर और लोगों, ईश्वर और दुनिया, ईश्वर और मानवता के बारे में है। इसलिए, मैं आइक्रोड की सराहना कर सकता हूँ क्योंकि वह ईश्वर को केंद्र में रखता है, भले ही वह संपूर्ण धर्मशास्त्र को सही ढंग से न समझ पाए।

दूसरी जगह जहाँ ईक्रोड सही है, एक अर्थ में, वह यह है कि वह वाचा के विचार पर बहुत जोर देता है। वह वास्तव में सुझाव देता है कि वाचा पुराने नियम के धर्मशास्त्र का केंद्र है। परमेश्वर नूह के साथ वाचा बनाता है, वह मूसा के साथ वाचा बनाता है, वह पहले अब्राहम के साथ वाचा बनाता है, फिर मूसा के साथ, और फिर दाऊद के साथ, और फिर आपके पास नई वाचा है।

तो शुरू से लेकर आखिर तक वाचा का विषय यही है, और उससे असहमत होना मुश्किल है क्योंकि जब आप नए नियम में आते हैं, जब यीशु हमारे साथ अपने रिश्ते, प्रभु के भोज के बारे में बात करते हैं, तो वे नई वाचा की स्थापना करते हैं। हम, आज विश्वासियों के रूप में, नई वाचा के अधीन हैं। इसलिए एक अर्थ में आइक्रोड से असहमत होना बहुत मुश्किल है।

वह वाचा की केंद्रीयता का वर्णन करता है, और वह सिनाई में मूसा की वाचा के बारे में बात करता है, जो पुराने नियम के सभी अन्य विषयों को एक साथ लाता है। पुराने नियम की वाचा वास्तव में नए नियम में परमेश्वर के राज्य के समान ही है। और फिर, मुझे यकीन है कि कुछ लोग उससे असहमत होंगे, लेकिन मुझे लगता है कि जब पुराने नियम के अध्ययन और विशेष रूप से वाचा के अध्ययन की बात आती है तो उनकी शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है।

थियोडोरस सी. व्रीजेन, एक और बाइबिल धर्मशास्त्री, यह बहुत महत्वपूर्ण है, उनका मुख्य विचार ईश्वर का मनुष्यों के साथ संवाद था। यदि ईक्रोड ने वाचा पर ध्यान केंद्रित किया, तो व्रीजेन ने ईश्वर के मनुष्यों के साथ संवाद पर ध्यान केंद्रित किया। और फिर, उनसे असहमत होना मुश्किल है।

परमेश्वर आदम और हव्वा के साथ बगीचे की ठंडक में मिल रहा था। इसलिए, शुरू से ही परमेश्वर लोगों के साथ संबंध बनाना चाहता था। लेकिन वह कहता है कि धर्मशास्त्र विश्वास और रहस्योद्घाटन का विषय है और यह परमेश्वर की वास्तविकता और ईसाई चर्च के विश्वास से संबंधित है।

इस कारण से, पुराने नियम के धर्मशास्त्र को इज़राइल के धर्म के इतिहास के साथ-साथ विद्वत्ता की एक अलग शाखा के रूप में अपना स्थान प्राप्त है। वह इस बाइबिल-धर्मशास्त्रीय बिंदु से सहमत हैं कि आप केवल शुद्ध पुराने नियम के धर्मशास्त्र को ही नहीं अपना सकते, बल्कि

आपको गहरी समझ के लिए नए नियम को भी देखना होगा। उनका कहना है कि नए नियम के साथ संबंध आकस्मिक नहीं है, बल्कि अभिन्न होना चाहिए।

जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, जी.ई. राइट ने इतिहास पर जोर देने के कारण पवित्रशास्त्र की संपूर्ण एकता पर जोर दिया है। इतिहास ईश्वर का प्रकटीकरण है। इतिहास ईश्वर की गतिविधि का क्षेत्र है।

वह आइक्रोड से सहमत हैं कि वाचा का विचार केंद्रीय और रचनात्मक है। वह पीछे जाकर कहते हैं कि इतिहास को पुरातत्व और व्याख्या से अलग नहीं किया जा सकता। क्यों? पुरातत्व हमें उन लोगों के इतिहास और संस्कृति की झलक देता है जब ये सभी घटनाएँ घटित हुईं।

लेकिन, बेशक, आप इसे व्याख्या से अलग नहीं कर सकते। व्याख्या वास्तव में पहला कदम होना चाहिए। गेरहार्ड वॉन रेड, फिर से, हमने पहले उनका उल्लेख किया, और फिर से, उन्होंने कुछ चीजें सही कीं, और फिर उन्होंने कुछ चीजें गलत कीं।

उन्होंने एक संश्लेषणात्मक दृष्टिकोण का उपयोग किया, जिसमें दावा किया गया कि पुराने नियम का धर्मशास्त्र वर्षों से प्रचारित विश्वास की स्वीकारोक्ति की एक श्रृंखला है। भविष्यवक्ताओं के संदेश के बारे में उनका उपचार बहुत, बहुत अच्छा है क्योंकि वे भविष्यवक्ताओं पर बहुत ज़ोर देते हैं। उन्हें यह हेइलगेस्चिच्चे दृष्टिकोण पसंद आया, फिर से, उद्धार का इतिहास।

पुराने नियम के धर्मशास्त्र का उद्देश्य आस्था की दुनिया का व्यवस्थित संगठन बनाना नहीं है। इसलिए वॉन राड और व्यवस्थित धर्मशास्त्री यहाँ पर सिर झुकाएँगे। बल्कि इसका उद्देश्य एक कहानी को फिर से बताना है।

विषय वही है जो इस्राएल ने यहोवा के बारे में सीधे-सीधे कहा। और मुझे लगता है कि यहीं पर वह गलत हो गया। उसने मूल रूप से कहा कि यह इतिहास में नहीं हुआ।

यह बात नहीं है कि परमेश्वर ने क्या किया, बल्कि यह कि इस्राएल ने परमेश्वर के किए पर क्या विश्वास किया। खैर, फिर से, इस्राएल को कई बार समझ नहीं आया कि परमेश्वर क्या कर रहा था या उसने परमेश्वर के किए पर विश्वास नहीं किया। इसलिए, हम अपने धर्मशास्त्र को किसी के विश्वास या अनुभव के आधार पर नहीं बना सकते क्योंकि यह व्यक्तिपरक हो सकता है।

हमें ईश्वर के वस्तुनिष्ठ वचन पर विश्वास करना चाहिए, और यदि ईश्वर ने कहा कि यह हुआ, तो यह हुआ। वास्तव में इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि इज़राइल ने क्या विश्वास किया कि यह हुआ। और वॉन राड ईक्रोड के खिलाफ जाते हैं, जहाँ वे कहते हैं कि नहीं, पुराने नियम में कोई धार्मिक केंद्र नहीं है।

हाँ, वाचा एक महत्वपूर्ण पहलू है, लेकिन यह केंद्र नहीं है। वाल्टर ज़िमरली, एक अन्य पुराने नियम के विद्वान कहते हैं कि कुंजी की कुंजी है, और यहाँ मैं उनसे सहमत हूँ कि पुराने नियम के धर्मशास्त्र का केंद्र स्वयं ईश्वर है। और मुझे लगता है कि पुराने नियम के बहुत से विद्वान, आज भी, हाँ कहेंगे, यह सही है।

हालाँकि इसराइल के विश्वास और उसके ऐतिहासिक अनुभवों के बीच एक विशेष रूप से घनिष्ठ संबंध था, फिर भी हमें इस गलत धारणा से बचना चाहिए कि इसराइल के लिए, इतिहास इस तरह से यहोवा का रहस्योद्घाटन करने वाला शब्द बन गया। इसलिए, एक तरह से, वह वॉन राड के खिलाफ़ प्रतिक्रिया करता है। इतिहास घटनाओं के दौरान यहोवा की घोषणा नहीं करता है।

विनाशकारी घटनाएँ लोगों को यहोवा के वचन को सुनने के लिए प्रेरित करती हैं। और फिर, वह कुछ बातें सही और कुछ बातें गलत करता है। क्लॉस वेस्टरमैन कहते हैं कि पुराने नियम के धर्मशास्त्र की संरचना अवधारणाओं के बजाय घटनाओं पर आधारित होनी चाहिए।

पुराने नियम में एक कहानी बताई गई है, और फिर से, उसके लिए, यह एक सच्ची कहानी है। आशीर्वाद पर जोर। वह अकेला नहीं है।

कुछ लोग कहते हैं कि पुराने नियम के धर्मशास्त्र की कुंजी और केंद्र आशीर्वाद है। परमेश्वर अपने लोगों को शुरू से ही आशीर्वाद देता है। आप उत्पत्ति 1:28 से शुरू कर सकते हैं, और फिर आप नूह और अब्राहम पर जा सकते हैं।

आप आशीर्वाद के विचार को धर्मग्रंथों के माध्यम से खोज सकते हैं। फिर से, हम इस तथ्य से इनकार नहीं कर सकते कि आशीर्वाद एक बहुत ही महत्वपूर्ण अवधारणा है। लेकिन यह कहना कि यह केंद्र है, शायद बहस का विषय हो।

मोक्ष के विपरीत, आशीर्वाद ऐसी चीज़ है जो हर समय चलती रहती है और पूरी दुनिया पर लागू हो सकती है। इसलिए, वह मूल रूप से उस बारे में बात करता है जिसे बाद में सुधारक सामान्य अनुग्रह कहेंगे। उद्धारण, यह ईश्वर का शांत, निरंतर बहने वाला और अनदेखा कार्य है, जिसे क्षणों या तिथियों में कैद नहीं किया जा सकता है।

और मुझे लगता है कि हम जो बिंदु एक, दो और तीन में विभक्त होना पसंद करते हैं, उनके लिए कभी-कभी वेस्टरमैन के काम को देखना अच्छा होता है क्योंकि यह थोड़ा रहस्यपूर्ण होता है और यह कहने के लिए थोड़ा समय देता है कि कभी-कभी हम वास्तव में नहीं जानते हैं। और मुझे लगता है कि कभी-कभी पुराने नियम के धर्मशास्त्र और किसी भी धर्मशास्त्र में, हमें थोड़ी विनम्रता की आवश्यकता होती है, और इसीलिए मुझे यह विचार पसंद है कि कभी-कभी हम यह नहीं समझ पाते हैं कि ईश्वर क्षणों और तिथियों में क्या कर रहा है। और मुझे लगता है कि यह बहुत, बहुत अच्छा है।

जब मैं उस समय स्कूल जाता था, तो ब्रेवार्ड चाइल्ड्स उन पहले लोगों में से एक थे जो बड़े थे। उन्होंने दो खंडों का सेट बनाया, और उन्होंने 80 और 90 के दशक में इस विहित विश्लेषण को विकसित किया। समस्या यह है कि उन्होंने पुराने नियम के बारे में आलोचनात्मक निष्कर्षों को भी स्वीकार कर लिया और पुराने नियम की ऐतिहासिकता या प्रेरितों के काम की ऐतिहासिकता को अस्वीकार कर दिया।



लेकिन उनका काम इस तथ्य में बहुत अच्छा है कि वे समझते हैं, और वे पुष्टि करते हैं कि बाइबल का धर्मशास्त्र और चर्च का धर्मशास्त्र शून्य में विकसित नहीं हुआ था, हाथी दांत के टॉवर में विकसित नहीं हुआ था, बल्कि यह चर्च के विकास के साथ-साथ विकसित हुआ था। और यही विहित दृष्टिकोण है। वे विहित को चर्च की प्राप्त, एकत्रित और व्याख्या की गई सामग्री के रूप में परिभाषित करते हैं।

इसलिए, कृपया ध्यान दें कि कुछ लोगों के लिए, कैनन केवल प्राप्त और एकत्रित पाठ होगा। लेकिन वह चर्च की व्याख्या की गई सामग्री को जोड़ता है। इसलिए, फिर से, वह चर्च को लाता है, और आप धर्मशास्त्र नहीं बना सकते हैं, वह तर्क देगा, चर्च की व्याख्या के बिना।

इसीलिए बहुत से छात्र, और यह सही भी है, चर्च के पादरियों के पास वापस जाते हैं। उन्होंने मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान की घटनाओं और आरंभिक चर्च के विकास के ठीक बाद धर्मग्रंथ की व्याख्या कैसे की? इसलिए, मुझे लगता है कि उनका विचार बहुत अच्छा है। यह भौतिक धार्मिक संदर्भ स्थापित करता है जिसमें परंपरा कार्य करना जारी रखती है।

कैनन के विचार से हमें कैनोनिकल का विचार मिलता है, परंपराओं को आधिकारिक रूप से स्वीकार करना और वह प्रक्रिया जिसके द्वारा संग्रह अपने साहित्यिक और पाठ्य स्थिरीकरण पर पहुँचता है। उदाहरण के लिए, उदाहरण के लिए कुछ अपोकलिफ़ल पाठ को धर्मग्रंथ में क्यों नहीं शामिल किया गया? खैर, उन्होंने ऐसा नहीं किया क्योंकि कुछ लोग कहेंगे, ठीक है, यह इसलिए शामिल नहीं हुआ क्योंकि चर्च ने इसे स्वीकार नहीं किया। तो, आपके पास पहली सदी या दूसरी सदी या जो भी हो, ये सभी लेखन हो सकते हैं, और वे धर्मग्रंथ में नहीं हैं।

क्यों? क्योंकि चर्च ने कहा कि वे विहित नहीं हैं। इसलिए उन्होंने कहा कि आप चर्च को धर्मशास्त्र की प्रक्रिया से अलग नहीं कर सकते। उन्होंने आगे कहा कि सबसे प्राचीन मण्डलियों की गवाही, जो सबसे पुरानी प्रेरितिक परंपरा के साथ ऐतिहासिक निरंतरता का दावा करती है और सार्वभौमिक चर्च की सबसे समावेशी भौगोलिक गवाही का प्रतिनिधित्व करती है, को एक प्रमुख मानदंड के रूप में इस्तेमाल किया गया था जिसके द्वारा किसी पुस्तक के अधिकार का निर्धारण किया जाता था।

और फिर, यह चर्च से अलग होकर नहीं किया जा सकता था। इसे चर्च और चर्च परंपरा के भीतर ही किया जाना था। पुराने नियम को नए नियम के संबंध में समझा जाता है, लेकिन नए नियम को पुराने नियम से अलग करके समझना असंभव है, और पुराने नियम के सभी विद्वान इस पर आमीन कहेंगे, और हमें अपने छात्रों को इस बात पर ज़ोर देना होगा।

बाइबिल धर्मशास्त्र का एक प्रमुख कार्य पूरे ईसाई बाइबिल पर विचार करना है, जिसमें दो बहुत अलग आवाज़ें हैं, जिनमें से दोनों को चर्च यीशु मसीह की गवाही मानता है। जहाँ मैं उससे असहमत हूँ, मैं कहूँगा कि दो अलग-अलग आवाज़ें नहीं हैं। यह एक ही आवाज़ है, और अगर वह मतभेदों पर ध्यान केंद्रित करना चुनता है, तो यह ठीक है।

कुछ लोग वसीयतनामे के बीच की असंततता पर ध्यान केंद्रित करना पसंद करते हैं। हममें से कुछ लोग निरंतरता पर ध्यान केंद्रित करना पसंद करते हैं। मुझे यकीन है कि कहीं न कहीं एक सुखद मध्यम मार्ग है।

तो, बाइबल धर्मशास्त्री का कार्य क्या है? खैर, पुराना नियम उस मसीह की गवाही देता है जो अभी तक नहीं आया है - नया नियम उस मसीह की गवाही देता है जो समय की परिपूर्णता में प्रकट हुआ है। इसलिए, अगर हम यीशु पर विश्वास करते हैं कि पुराना नियम उसके बारे में है, तो हमें पुराने नियम को वापस देखने और यह देखने की ज़रूरत है कि वह कहाँ है।

जब यीशु मृतकों में से जी उठते हैं, तो लूका हमें इम्माऊस के रास्ते पर बताता है कि कैसे वह दो शिष्यों से मिलता है जो यरूशलेम में जो कुछ हुआ उसके बारे में थोड़ा हैरान हैं, और यीशु उन्हें डांटते हैं। यीशु कहते हैं, ये सभी मूर्ख हैं, और भविष्यद्वक्ताओं ने जो कुछ कहा है उस पर विश्वास करने में धीमे हैं। क्या यह आवश्यक नहीं था कि मसीह को ये सब सहना पड़े और अपनी महिमा में प्रवेश करना पड़े? और मत्ती से शुरू करते हैं? नहीं।

मार्क से शुरू करते हुए? नहीं। मूसा और सभी भविष्यद्वक्ताओं से शुरू करते हुए, उसने सभी शास्त्रों में से अपने बारे में जो कुछ भी लिखा था, उसका अर्थ उन्हें समझाया। और बाद में जब वह शिष्यों के सामने प्रकट हुआ, तो उसने कहा कि ये वे शब्द हैं जो मैंने तुमसे तब कहे थे जब मैं तुम्हारे साथ था।

मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं और भजनों में मेरे बारे में जो कुछ लिखा है, वह अवश्य पूरा होगा। इसलिए, यदि हम यीशु को देखे बिना पुराने नियम को पढ़ते हैं, तो हम मुख्य बात को समझने से चूक जाते हैं। यीशु स्वयं ऐसा कहते हैं।

न तो बाइबिल धर्मशास्त्र और न ही हठधर्मी धर्मशास्त्र अपने आप में एक लक्ष्य है, बल्कि वे उपयोगी उपकरण बने हुए हैं जिनके द्वारा पवित्र शास्त्रों में ईश्वर की जीवंत आवाज़ तक नई पहुँच को सक्षम किया जा सकता है। विहित आलोचना, फिर से, ब्रेवार्ड चाइल्ड्स से है। यह उनके काम का एक सारांश मात्र है।

ईश्वर ने प्राचीन इस्राएल के इतिहास में हस्तक्षेप किया। ईश्वर के कृत्यों की विश्वसनीय गवाही में धार्मिक लेखन का उदय हुआ। धार्मिक लेखन को आदर्श के रूप में आस्था के समुदाय के बीच विभिन्न स्तरों पर स्वीकृति मिली।

जैसे-जैसे समय बीतता गया, अधिक स्वीकृत लेखन को संशोधित, संपादित और आकार दिया गया ताकि भविष्य की पीढ़ियों को परमेश्वर के कार्यों के अभिलेखों को संप्रेषित किया जा सके। लेखन को पर्याप्त रूप से आकार दिया गया ताकि इसे विश्वास के समुदाय द्वारा विहित घोषित किया जा सके। अर्थात्, वे सभी भावी विश्वासियों के लिए परमेश्वर के ऐतिहासिक कार्यों के तथ्यों और अर्थ को व्यक्त करने में सक्षम हैं।

और यहीं पर पुराने नियम के धर्मशास्त्र के परिचय और कार्यप्रणाली का अंत होता है।

यह डॉ. टिबेरियस रत्ता और पुराने नियम के धर्मशास्त्र पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 1, परिचय और कार्यप्रणाली है।